इकाई 8 भाषा विकास हेतु कक्षाकक्ष गतिविधियाँ

इकाई की रूपरेखा

8.0 प्रस्तावना

8.1 उद्देश्य

8.2 अंग्रेजी अध्यापन की पुरानी पद्धतियाँः एक समीक्षा

8.3 भाषा अध्यापन में वर्तमान प्रवृत्तियाँ

8.4 अंग्रेजी अध्यापन–अधिगम में रचनावादी परिप्रेक्ष्य

8.5 प्राथमिक विद्यालय स्तर पर भाषा कौशल के उन्नयन के लिए प्रौद्योगिकी का प्रयोग करना

8.6 सारांश

8.7 इकाई के अंत में अभ्यास

8.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

8.9 अन्य उपयोगी पुस्तकें

8.0 प्रस्तावना

आप अपनी कक्षा में कैसे पढ़ाते हैं, इससे संबंधित कुछ वक्तव्यों से शुरु करते हैं। उसी अनुसार, प्रत्येक वक्तव्य के सामने सही या गलत लिखें। यदि आप सहमत नहीं हैं तो बताइए, क्यों?

मैं अपनी कक्षा में कैसे पढ़ाता हूँ?

1) मैं जब कुछ पठन या लेखन कार्य करना चाहता हूँ तो मैं विद्यार्थियों को छोटे–छोटे समूहों में कार्य करने के लिए कहता हूँ। ....

2) मैं नए–नए शब्दों का अर्थ मातृ भाषा में बताता हूँ। ....

3) पठन की कक्षा में मैं प्रायः पाठ को जोर–जोर से पढ़ता हूँ जिससे विद्यार्थी उसे सावधानीपूर्वक सुनें। ....

4) मैं अर्थ को प्रायः श्यामपट पर लिखता हूँ और अपेक्षा करता हूँ कि विद्यार्थी उसे अपनी उत्तरपुस्तिका में लिखें। ....

5) समूह–कार्य के दौरान मैं मेज पर बैठता हूँ और विद्यार्थियों की उत्तरपुस्तिकाओं में सुधार करता हूँ। ....

6) मैं केवल प्रतिस्थापन अभ्यासों का प्रयोग करता हूँ जिससे विद्यार्थी अंग्रेजी की संरचनाओं को सीखें। ....

7) मैं समूह कार्य और युगल कार्य से बचता हूँ क्योंकि इसके कारण कक्षा में अत्यधिक शोर और अशांति होती है। ....

8) यदि विद्यार्थियों को संरचना सही सिखाई जाए और उसका यथोचित अभ्यास कराया जाए, तो यह माना जा सकता है कि संरचना अच्छीतरह सीख ली गई है और विद्यार्थी आवश्यकता पड़ने पर उसका सही प्रयोग कर सकते हैं। ....

9) मैं समझता हूँ कि बच्चा जिस क्षण गलती करें उसी क्षण उसे सुधारा जाए।
....

10) विदेशी भाषा को सीखना सामान्यतया उस भाषा के व्याकरण तथा ध्वनि व्यवस्था में निपुणता हासिल करना है। ....

11) निम्न प्राथमिक स्तर पर प्रौद्योगिकी लागू करने की कोई आवश्यकता नहीं है।
....

12) ध्वनियों, वर्गों, शब्दों अथवा वाक्यों को अलग–अलग पढ़ाना भी आवश्यक है।
....

इस इकाई में, हमने भाषा शिक्षण के परंपरागत एवं सम–सामयिक परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत किए हैं। हमने भाषा विकास के लिए कक्षाकक्ष अभ्यास में प्रौद्योगिकीय संप्रेषण के महत्व पर भी चर्चा की है। यहाँ चर्चा किए गए प्रश्नों के उत्तर आपको भाषा शिक्षण के विविध परिप्रेक्ष्यों के संबंध में अपनी कक्षा–कक्ष गतिविधियों को पहचानने और समझने में सहायक होंगे।

8.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आपः

- बीसवीं एवं इक्कीसवीं शताब्दी में प्रचलित भाषा अध्यापन की विधियों की आलोचनापरक जाँच कर सकेंगे;
- संप्रेषण पर बल देने और चर्चावादी विधियों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन कर सकेंगे; और
- अध्येता एवं अध्यापक दोनों को समर्थ बनाने में प्रौद्योगिकी की भूमिका पर चर्चा कर सकेंगे और अध्यापन एवं अधिगम प्रक्रिया में उनका प्रयोग कर सकेंगे।

8.2 अंग्रेजी अध्यापन की पुरानी पद्धतियाँः एक समीक्षा

इस भाग में हम द्वितीय भाषा के रूप में अंग्रेजी पढ़ाने की कुछ पद्धतियों की समीक्षा करेंगे।

उन्नीसवीं शताब्दी के चौथे दशक में पहले द्वितीय भाषा के रूप में अंग्रेजी व्याकरण अनुवाद पद्धति के माध्यम से पढ़ाई जाती थी। यह किसी भी भाषा को उसके व्याकरण के विस्तृत अध्ययन के माध्यम से अध्यापन का तरीका था। उसके बाद अध्येता मूल पाठ के वाक्यों एवं अंगों का मातृ भाषा से लक्षित भाषा (अंग्रेजी) में और लक्षित भाषा से मातृ भाषा में अनुवाद करने में व्याकरण के नियमों का अनुप्रयोग करता था। शब्दावली द्विभाषी शब्द सूचियों के माध्यम से सिखाई जाती थी और इस प्रकार शब्दों को याद रखने में काफी तनाव रहता था। संक्षेप में श्रवण (सुनने) एवं वाचन (बोलने) को कम महत्व दिया जाता था और पठन एवं लेखन कौशल को अधिक महत्व दिया जाता था। इस प्रकार कक्षा प्रक्रिया में अध्यापक का प्रभुत्व रहता था और अध्येता की भूमिका निष्क्रिय रहती थी।

यहाँ हम एक पल के लिए रूकते हैं और सोचते हैं।

नीचे एक विशिष्ट अभ्यास दिया गया है जिसका प्रयोग आमतौर पर कक्षा में व्याकरण अनुवाद पद्धति का अनुकरण करके अध्येता की प्रवीणता का परीक्षण करने के लिए किया जाता था।

नीचे कुछ वाक्य दिए गए हैं। उनमें से संज्ञा शब्द चुनिए और लिखिए कि वे व्यक्तिवाचक, भाववाचक अथवा जातिवाचक संज्ञाएँ हैं।

i) बच्चे खुश थे।

ii) उसकी ईमानदारी ने प्रायः उसे परेशानी में डाला।

iiii) क्रिस्टल के पात्र में लाल गुलाब बहुत सुंदर लगते हैं।

1) क्या आप अभ्यास करने वाले अध्यापक के रूप में यह मानते हैं कि आपके प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों को व्याकरण के इतने विशद ज्ञान से लाभ होगा?

2) क्या आप यह मानते हैं कि भारतीय कक्षाओं में अभी भी व्याकरण अनुवाद पद्धति का अनुकरण किया जाता है? यदि हाँ, तो क्यों?

उन्नीसवीं शताब्दी के पाँचवें दशक के पूर्वार्ध में भाषा विशेषज्ञों ने व्याकरण अनुवाद पद्धति को नकार दिया क्योंकि वे यह महसूस करने लगे थे कि व्याकरण के विशद अध्ययन से भाषा सीखने का कोई परिणाम नहीं निकल रहा था और अध्येता के लिए मातृ भाषा से लगातार अनुवाद करना, लक्षित भाषा के धारा प्रवाह प्रयोग में रुकावट उत्पन्न कर रहा था।

उक्त अवधि में (अर्थात् सन् 1940 और उसके बाद में) चार्ल्स फ्राइस जैसे भाषा विशेषज्ञों ने भाषा अध्यापन में संरचनात्मक भाषा विज्ञान के सिद्धांतों का अनुप्रयोग किया। उनका यह अभिमत था कि भिन्न–भिन्न भाषाओं में एक ही अर्थ को अभिव्यक्त करने के भिन्न–भिन्न तरीके होते हैं। इन्हें हम ***भाषाओं के विन्यास अथवा संरचनाएँ*** कहते हैं। किसी भी भाषा में विन्यास शब्दों से बनता है लेकिन प्रत्येक भाषा में शब्दों को कुछ विशिष्ट तरीकों से रखा जाता है। इसलिए, भाषा का प्रयोग करने में समर्थ बनने के लिए शब्दों को और उनके उस क्रम को जानना आवश्यक होता है जिस क्रम में वे उस भाषा में प्रयोग किए जाते हैं। भाषा अध्यापन में अध्येता को विन्यास या संरचना बताकर उसका अच्छी तरह अभ्यास कराया जाता है और उसके बाद नया विन्यास या संरचना सिखाई जाती है। जब अध्येता उस भाषा को सीखने के लिए आवश्यक विशिष्ट संरचनाओं में निपुणता हासिल कर लेता है तभी उससे यह अपेक्षा की जाती है कि वह स्थिति के अनुसार नई–नई अभिव्यक्तियाँ असीमित संख्या में कर सकता है। अध्येता से अपेक्षा की जाती है कि वह जो कुछ भी बोले या लिखे वह बिल्कुल सही हो और इस व्याकरणिक परिशुद्धता का पता निरंतर अभ्यास से और प्रतिस्थापन तालिकाओं में सही वाक्य का निर्माण कराकर होता था। इन प्रतिस्थापन तालिकाओं का उद्देश्य अध्येताओं को कई सही उदाहरणों का अनुकरण अथवा निर्माण करवाकर संरचना के सही रूपों का प्रयोग करने में समर्थ बनाना है। वास्तव में गलतियों को गंभीर त्रुटियाँ माना जाता था जिन्हें आदत बनने से पहले ही तुरंत दूर किया जाता था।

नीचे प्रतिस्थापन तालिका दी गई है जिसका प्रयोग संरचनात्मक दृष्टिकोण रखने वाले अध्यापक द्वारा किया जाता है:

1	2	3	4
This That	is is not	my your our their Mary's the doctor's his her	house bottle of ink garden goat cow bedroom motor car train

स्रोत : जी. नागराज (1996), *इंग्लिश लैंग्वेज टीचिंग,* ओरिण्ट लॉगमैन, पृ. 23

आप इस तालिका से 256 सही वाक्य बना सकते हैं।

इस प्रकार के अभ्यास से विद्यार्थी क्या सीखेंगे? आपके अनुसार, इस प्रकार के अभ्यास का प्रयोग करने में किस प्रकार की समस्याएँ आ सकती हैं?

8.3 भाषा अध्यापन में वर्तमान प्रवृत्तियाँ

उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्ध से ही "संप्रेषण क्षमता" (communicative competence) (हाइम्स, 1972) भाषा शिक्षाशास्त्र का चिंतनीय विषय बन गया था। अनेक विद्वानों का यह मानना था कि संरचनात्मक उपागम के माध्यम से शिक्षित अध्येता "सही" वाक्य बनाने में तो समर्थ थे परंतु धाराप्रवाह संप्रेषण नहीं कर पाते थे। इसके अतिरिक्त निर्मित वाक्य प्रायः स्थिति के अनुरूप नहीं होते थे। भाषाविदों ने इस ओर ध्यान दिलाया कि अध्येता या तो बहुत अधिक औपचारिक होते थे या फिर बहुत अधिक अनौपचारिक क्योंकि वे सामाजिक भाषा की रूढ़ियों को व्यक्त नहीं कर पाते थे। उदाहरण के लिए, अध्येता इतना अधिक औपचारिक हो सकता था और वह अपने घनिष्ठ मित्र को भी यह कह सकता था कि "Excuse me, would you mind closing the door और नितांत अजनबी को भी कह सकता था कि "शट दी डोर, विल यू" (Shut the door, will you)। इस प्रकार की अभिव्यक्तियाँ व्याकरणिक दृष्टि से सही हैं परंतु सामाजिक संदर्भ में सही नहीं है। इसलिए विषय विशेषज्ञों ने संदर्भ के अनुसार अभिव्यक्ति की "उपयुक्तता" पर बल दिया।

प्रकार्य का महत्व

भाषाविदों ने इस बात का भी संकेत किया कि अभिव्यक्ति के रूप और प्रकार्य के बीच अंतर होता है। उदाहरण के लिए, आप इस अभिव्यक्ति को कैसे करेंगे – "why don't you close the door? व्याकरणिक दृष्टि से यह वाक्य किस प्रकार का है? अभिव्यक्ति से क्या अर्थ संप्रेषित होता है?

लिटिलवुड (1998) के अनुसार ".... संरचनात्मक उपागम से यह वाक्य निस्संदेह प्रश्नवाचक है, परंतु कार्य की दृष्टि से यह वाक्य संदिग्ध है। कुछ परिस्थितियों में यह प्रश्नवाचक का कार्य कर सकता है। उदाहरण के लिए, वक्ता वास्तव में यह जानना चाहता हो कि उसका साथी किसी दरवाजे को कभी भी बंद क्यों नहीं करता। दूसरी परिस्थितियों में यह आदेश का कार्य कर सकता है – संभवतः यह स्थिति भी हो सकती है कि अध्यापक उस अध्येता को कह रहा हो जिसने कक्षा का दरवाजा खुला छोड़ दिया हो। एक अन्य स्थिति भी हो सकती है जिसमें इसे तर्क, सुझाव या शिकायत माना जाएगा।" दूसरे शब्दों में, यह वाक्य हालाँकि स्थिर और सपाट है तथापि इसके संप्रेषण प्रकार्य भिन्न–भिन्न हो सकते हैं जो विशिष्ट परिस्थिति और सामाजिक कारकों पर निर्भर करेगा। संभव है कि द्वितीय भाषा का अध्येता, वक्ता के आशय को समझ और व्यक्त न कर पाए।

अधिगम युक्तियों के रूप में गलतियाँ

भाषा अध्यापन का संप्रेषणात्मक उपागम **"परिशुद्धता"** के स्थान पर **"प्रवाहमयता"** के काल में सामने आया और भाषा विशेषज्ञों ने "अभिव्यक्ति की व्याकरणिक शुद्धता" के स्थान पर "संप्रेषित संदेश के अर्थ" पर अधिक बल दिया। इसीलिए, विषय विशेषज्ञों ने यह स्वीकार किया कि संवाद करते समय गलतियाँ होंगी परंतु इस विचलन को वक्ता के वैयक्तिक अधिकार का रूप माना गया।

यह माना गया कि अध्येता की यह अभिव्यक्ति भाषा अध्यापन प्रक्रिया का बहुमूल्य स्रोत हो सकती है और अध्येता की गलतियों के परीक्षण द्वारा उसके द्वारा अपनाई गई नीति का अनुमान लगाया जा सकता है। संप्रेषण के स्तर पर अध्येता के प्रयास में गलतियाँ उसकी अधिगम प्रक्रिया की कुँजी सिद्ध हुई। हम कक्षा 2 के बच्चे की अभिव्यक्ति का उदाहरण लें। मान लों, वह यह वाक्य बोलती है "He go to school everyday."। इस वाक्य में स्पष्ट रूप से गलती है परंतु यह गलती इस कारण हो सकती है कि अध्येता ने निम्नलिखित वाक्यों को सुना हो और सफलतापूर्वक उनका निर्माण किया हो : "I go to school every day", "you go to school everyday", "we go to school everyday", और "they go to school everyday"। इन वाक्यों में कोई नहीं कह सकता कि कोई गलती हुई है। इसलिए अध्येता ने आगे चलकर यह वाक्य बना दिया "He go to school everyday." जो गलत हो गया। संप्रेषणात्मक भाषा अध्यापन (Communicative Language Teaching – CLT) के समर्थक निस्संदेह इसे गलती कहेंगे किन्तु वे इसे सकारात्मक संकेत भी मानेंगे कि अध्येता द्वितीय भाषा के आँकड़ा संसाधन (data-processing) की प्रक्रिया में और अंग्रेजी की नियम व्यवस्था के अनुसार कुछ नियमों का अनुकरण करने में मानसिक रूप से सक्रिय है। इसलिए वे इसे "सीखने की विफलता" या "बुरी आदत बनना" नहीं मानेंगे। यहाँ यह उल्लेखनीय होगा कि अध्येताओं की गलती करने की इस नई मनोवृत्ति का अर्थ उनकी गलतियों को अनुमोदित करना अथवा सही/या सुधारात्मक अध्यापन का अभाव मानना नहीं है परंतु इसका अर्थ गलतियों को "सीखने में विफलता" के स्थान पर "सीखने का प्रयास" मानना है।

इस प्रकार आप यह स्पष्ट देख सकते हैं कि अध्येताओं की गलती और गलती सुधार की मनोवृत्ति में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। गलतियों को दोष नहीं माना जाता बल्कि अधिगम प्रक्रिया का आवश्यक एवं व्यवस्थित अंग माना जाता है। इस मनोवृत्ति के लिए छोटे समूह/जोड़े में कार्य करने में सहयोगी कार्यकलापों के दौरान अध्यापकों द्वारा "हस्तक्षेप न करना" आवश्यक होता है। अध्यापकों को परामर्श दिया जाता है कि जब तक वह कार्यकलाप पूरा न हो जाए, वे बच्चों की गलतियों में हस्तक्षेप न करें। अन्यथा निरंतर एवं तात्कालिक हस्तक्षेप से अध्येता इतने संकोची हो जाएँगे कि वे लक्षित भाषा का प्रयोग करने में बाधा महसूस करेंगे।

अध्येता की भूमिका

यह उपागम परंपरागत अधिकार एवं अधिनायकवादी अध्यापक की कक्षा की नहीं बल्कि अधिक संवाद करने तथा सीखने की अपनी जिम्मेदारी को समझने आवश्यकता पर बल देने वाले अध्येता की माँग करता है।

अध्येता स्वंय, अधिगम प्रक्रिया और अधिगम के उद्देश्य के बीच वार्ताकार होता है। अध्येता के लिए यह आवश्यक है कि वह अधिक से अधिक लाभ उठाए और उससे स्वतंत्र रूप से सीखे। (ब्रीन एवं कैंडलिन, 1987)। अध्येताओं के लिए व्यक्तिवादी के बजाय सहयोगी शैली अनजान हो सकती है और उन्हें इसका प्रशिक्षण देना होगा कि वे इस रीति से "कैसे सीखें।"

अध्यापक की भूमिका

शिक्षा की परंपरागत पद्धति में, कक्षा में अध्यापक का मुख्य कार्य अथवा भूमिका अध्येताओं को सूचना प्रदान करना है। यह पाठ को जोर–जोर से पढ़ने और श्यामपट्ट पर उसके अर्थ लिखने अथवा पूरे पाठ को चॉक से श्यामपट्ट पर लिखने के रूप में हो सकता है। इसे विद्यार्थी अपनी उत्तरपुस्तिका में लिखते हैं और परीक्षा में लिखने के लिए दिल से पूरी

तरह उसे सीखते हैं। संप्रेषणात्मक भाषा अध्यापन ;ब्स्ज्द्ध अर्थात् भाषा अध्यापन की वर्तमान प्रवृत्ति में अध्यापक की भूमिका बिल्कुल भिन्न होती है। आइए, भाषा सिखाते समय आपकी भूमिका क्या होनी चाहिए, इस पर नज़र डालते हैंः

i) **अध्यापक सुगमकर्ता के रूप में:** अध्यापक की प्रथम भूमिका यह होनी चाहिए कि वह कक्षा में सभी अध्येताओं के बीच और अध्येताओं एवं पाठ के बीच तथा पाठ से उत्पन्न कार्यकलापों के बीच संप्रेषण प्रक्रिया को सुगम बनाए।

ii) **अध्यापक साथी सहभागी के रूप में:** अध्यापक की दूसरी भूमिका अध्यापक–अध्येता समूह के बीच स्वतंत्र सहभागी के रूप में कार्य करने की है। अध्यापक को कुछ गतिविधियों जैसे भूमिका निर्वाह अथवा अनुकरण करने में भी भाग लेना चाहिए। इससे उसे अनौपचारिक रूप से नए विचार प्रस्तुत करने और समूह का उनके बेहतर भविष्य की योजना बनाने के लिए मूल्यांकन करने में सफलता मिलेगी। इससे विद्यार्थियों के बीच बेहतर सामंजस्य बिठाने में भी काफी सहायता मिलेगी। इसमें एकमात्र समस्या यह होगी कि अध्यापक को इस प्रकार की भूमिका को निभाने और स्वयं को विद्यार्थियों के स्तर तक बनाए रखने में मुश्किल होगी (क्योंकि उसे सामग्री तथा अपेक्षित विवरण की पूरी जानकारी होती है)। इसके अतिरिक्त पूरी चर्चा में अध्यापक का आधिपत्य बने रहने का भी खतरा रहता है। अतः अध्यापक को समूह का हिस्सा बनने और विद्यार्थी के रूप में भूमिका निभाने का सजग प्रयास करना होगा।

iii) **अध्यापक संयोजक के रूप में:** अध्यापक की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका अच्छा संयोजक बनने की है। विद्यार्थियों को यह जानकारी होनी चाहिए कि उनसे क्या करने की अपेक्षा की जा रही है। यदि विद्यार्थी को यह जानकारी नहीं है कि उसे क्या करना है तो भ्रांति बनी रहेगी और गतिविधि अप्रभावी हो जाएगी। "संयोजन" से हमारा आशय अध्यापन–अधिगम के सभी चरणों से है जैसे निर्देश, निष्पादन (यदि आवश्यक हो तो), समूह कार्य, जोड़े में कार्य, व्यक्तिगत कार्य संयोजित करना और तब अंत में विद्यार्थियों से यह जानने के लिए प्रतिपुष्टि लेना कि उन्होंने उस गतिविधि को कितना आत्मसात किया है। अतः यह नितांत आवश्यक है कि अध्यापक इस प्रकार के संयोजन कौशलों का विकास करें।

iv) **अध्यापक संसाधन अथवा परामर्शदाता के रूप में:** जब समूह कार्य निर्धारित किया जाता है तो अध्यापक को एक समूह से दूसरे समूह तक यह सुनिश्चित करने के लिए जाना होता है कि गतिविधि अभीष्ट दिशा में चल रही है और विद्यार्थी प्रभावी रूप में परस्पर कार्य कर रहे हैं। जब भी अध्यापक यह महसूस करे कि विद्यार्थियों को सहायता की आवश्यकता है, वह सहायता प्रदान कर सकता है। परामर्शदाता के रूप में वह सहायता करने के लिए तो उपलब्ध रहेगा लेकिन न तो हस्तक्षेप करेगा और न ही नियंत्रण अपने हाथ में लेगा।

v) **अध्यापक नियंत्रक के रूप में:** अध्यापक जिस समय कक्षा की कार्यवाहियों को सीधे नियंत्रित करता है उस समय वह नियंत्रक की भूमिका निभाता है। वह मोटे तौर पर यह निर्णय लेता है कि विद्यार्थी क्या करें और क्या एवं कब बोलें? साथ ही सहजता एवं आवेगशीलता की भी गुंजाइश रखता है।

नियंत्रक के रूप में अध्यापक की भूमिका परंपरागत होती है जिसे कई लोग (विद्यार्थी और उनके माता–पिता भी) उपयुक्त मानते हैं। इसका संबंध अध्यापक की अधिकारी के रूप में मूल संकल्पना से है – ऐसा अध्यापक जिसे (सही) ज्ञान है और जो उसे (अज्ञानी) विद्यार्थियों को देता है। भाषा अध्यापन के संबंध में अपनी चर्चा में हम इस पुराने विचार पर

प्रश्न चिन्ह लगा रहे हैं और सुझाव दे रहे हैं कि अध्यापक की अन्य भूमिकाएँ अधिक वांछनीय और प्रभावी हैं। यह यदा–कदा और अल्प समय के लिए ही होता है कि नियंत्रक की भूमिका अधिक प्रासंगिक और उपयोगी बन जाती है।

अनुदेशन सामग्री की भूमिका

संप्रेषण उपागम से तैयार पाठ्य सामग्री कक्षा में "प्रामाणिक" और "जीवन के नजदीक" सामग्री पर आधारित होती है। इसका अभिप्राय ऐसी सामग्री से है जो विशिष्ट रूप से भाषा अध्यापन के प्रयोजन से तैयार न की गई हो। अनुदेशन सामग्री में संकेत, पत्रिकाएँ, विज्ञापन, समाचारपत्र अथवा रेखाचित्रीय सामग्री जैसे तालिकाएँ, चार्ट, चित्र या मानचित्र शामिल हैं। उदाहरण के लिए, क्या आप विद्यार्थियों को अंग्रेजी अध्यापन के लिए नूडल के पैकेट पर लिखी निम्नलिखित पक्तियों को "प्रमाणिक सामग्री" मानेंगे।

चाट "ओ" स्मूडल

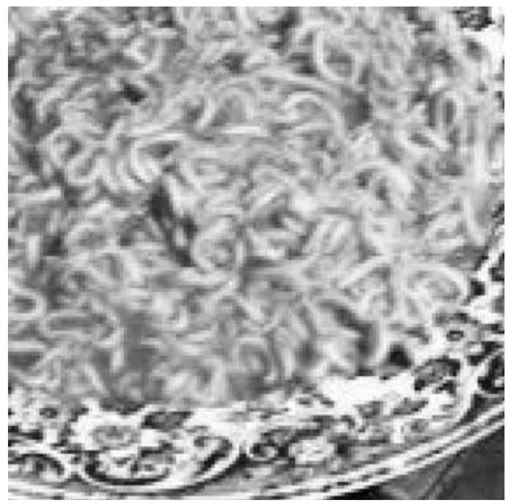

संघटकः 1 पैकेट टॉप रामन मसाला, 1 छोटी प्याज, 1 मध्यम आकार का टमाटर, 1 मिर्च, धनिया (पसंद के अनुसार), आधे नींबू का रस, उबले हुए आलू (इच्छानुसार)।

पद्धतिः स्मूडल को 1 मिनट तक उबाले, छानकर कटोरे में रखें। हल्का गर्म रहते ही स्मूडल में गार्निश का मिश्रण डालकर हिलाएँ। कटोरे में अन्य संघटक भी डाले। चम्मच से मिलाएँ। आपका चाट "ओ" स्मूडल तैयार है।

(इसे हिन्दी में विद्यार्थियों की सुविधा के लिए दिया गया है। पढ़ना अंग्रेजी का ही पाठ है)।

Chaat 'O' Smoodle

Ingredients: 1 Packet Top Ramen Masala,

1 small onion, 1 medium size tomato, 1 chilly,

Coriander (to one's liking), Juice of ½ a lime,

Boiled Potato (optional)

Method: Boil Smoodle for 1 minute. Strain and put in a bowl. Add the garnish mix to the smoodles while still hot and stir. Add all the other ingredients in the bowl. Toss with a spoon. Your chaat 'o' smoodle is ready.

क्या आप सोचते हैं कि निर्देशों के इस उदाहरण से कुछ गतिविधियाँ करवाई जा सकती हैं?

....

....

....

अंग्रेजी के संप्रेषण अध्यापन में प्रयुक्त अभ्यास के प्रकारों और तकनीकों से कक्षा के परिवेश में महत्वपूर्ण परिवर्तन आए हैं। संप्रेषणात्मक भाषा अध्यापन (CLT) की पाठ्य पुस्तकों में भाषा संबंधी खेलों तथा पहेलियाँ (crossword) बूझने, सूचना अंतराल गतिविधियों को शामिल किया जाता है। इसी प्रकार भूमिका निर्वाह और अनुकरण से भी भाषा संप्रेषण के लिए सामाजिक संदर्भ मिलता है।

निम्नलिखित पहेली को देखिए। यह विद्यार्थियों को भाषा सीखने में कैसे सहायक है।

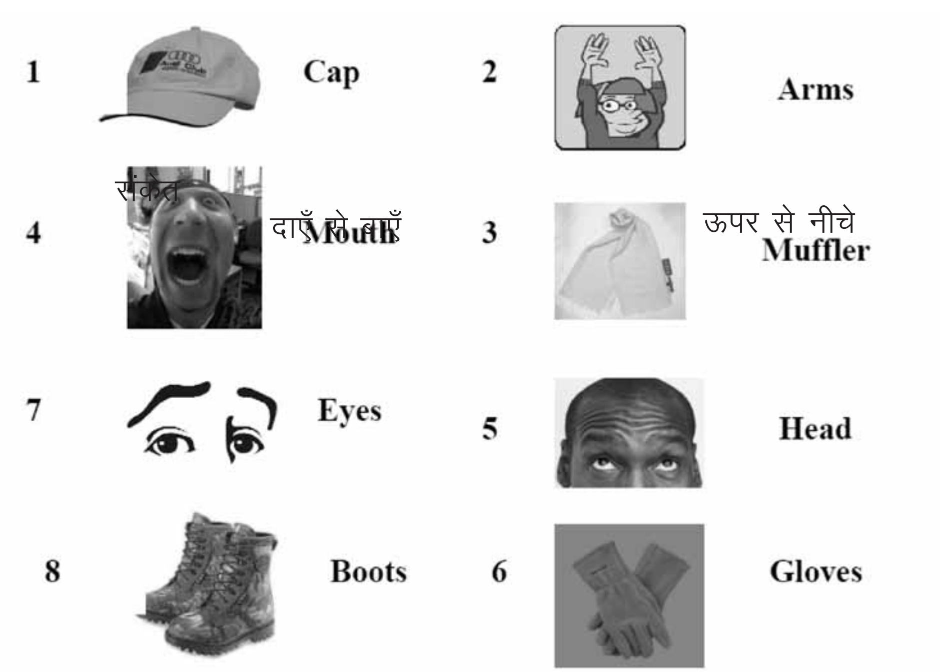

संकेत

दाएँ से बाएँ

ऊपर से नीचे

एक और गतिविधि देखते हैं:

जोड़ों में कार्य करें। मॉडल में दिए गए रेखांकित शब्दों के स्थान पर बॉक्स में दिए गए उपयुक्त शब्दों को प्रयोग करते हुए अपने सहभागी से बात करें।

An eraser	The new one
A sharpener	The one on the book
A ruler	The plastic one
A coloured pencil	The green one
A storybook	The one in your bag

जोड़ें/समूह में कार्य

अध्यापक धीरे–धीरे ऐसी कुछ भाषायी विशिष्टताएँ अर्जित करने के लिए जो औपचारिक अध्यापक केन्द्रित कक्षा में उपलब्ध नहीं होतीं, गहन संवाद के लिए समूह कार्य और जोड़े में कार्य के महत्व को समझने लगे हैं। समूह या जोड़े में कार्य से कक्षा का माहौल अधिक आरामदायक और तनावमुक्त रहता है और सभी अध्येताओं को अपने साथियों के साथ बातचीत करने और उन्हें सुनने का कक्षा में पर्याप्त समय मिलता है। इसका तात्पर्य यह है कि अध्येता न केवल पढ़ता और लिखता है (जैसा कि पहले के पाठ्यक्रमों में जोर दिया जाता था), बल्कि संवाद की स्थिति में सुनने और बोलने का अभ्यास भी करता है।

जोड़ों/समूह में कार्य करने के लाभ

- **अधिक भाषा व्यवहार:** जोड़े में या समूह में कार्य करने से विद्यार्थियों को अंग्रेजी बोलने का काफी अवसर मिलता है और इस प्रकार विद्यार्थियों का संवाद काल बढ़ता जाता है।
- **विद्यार्थी अधिक संलिप्त रहते हैं:** जोड़े में या समूह में कार्य करने से निश्चित रूप से विद्यार्थी अधिक संलिप्त महसूस करते हैं। उन्हें सौंपे गए कार्य पर संकेन्द्रित रहना होता है (जबकि परंपरागत व्याख्यान की कक्षा में वे अधिकांश समय निष्क्रिय श्रोता रहते हैं।)
- **विद्यार्थी सुरक्षित महसूस करते हैं:** जो विद्यार्थी कम आत्मविश्वास वाले और शर्मीले स्वभाव के होते हैं वे जब छोटे–छोटे समूहों में कार्य कर रहे होते हैं तो किसी प्रकार का दबाव या चिंता अनुभव नहीं करते। वास्तव में गहन सहायता शर्मीले विद्यार्थियों को आत्मविश्वास प्राप्त करने में सहायक होती है। इससे कक्षा में सहयोग और सहृदयता की भावना उत्पन्न होती है।

- **विद्यार्थी सहायता प्रदान करते हैं:** जोड़े में या समूह में कार्य से विद्यार्थियों को विचारों का आदान–प्रदान करने, गलतियों को सुधारने तथा अर्थ ढूँढ़ने के लिए सहायता और प्रोत्साहन मिलता है।
- **विद्यार्थी विभिन्न प्रकार के कार्यों को रोचक समझते हैं:** विद्यार्थियों को संवाद करने, चर्चा करने, भूमिका निभाने और वास्तविक जीवन की स्थितियों का अनुकरण करने का अवसर मिलता है। इस सबसे विद्यार्थी भिन्न–भिन्न किस्मों के कार्यों को करने में गहन रूप से संलिप्त हो जाते हैं और रोचकता का अनुभव करते हैं और इस प्रकार अध्येता के अभिप्रेरण में वृद्धि होती है।
- अध्येता की जिम्मेदारी और आत्म निर्भरता बढ़ती है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी : (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

1) छोटे समूहों में निम्नलिखित कार्य अध्येताओं को भाषा सीखने में किस प्रकार सहायक होता है? समूह को वास्तव में क्या चर्चा करनी चाहिए उसकी सूची बनाइए।

जम्मू–कश्मीर राज्य पूरी दुनिया के लोगों के लिए सर्वाधिक आकर्षक पर्यटन स्थल है। चार–चार के समूहों में चर्चा करें कि लोग इस राज्य में जाना क्यों पसंद करते हैं?

(आपके लिए संकेतः बढ़िया जलवायु, विस्मयकारी दृश्य, भिन्न–भिन्न हस्तशिल्प, शीतकालीन खेलों की सुविधाएँ, आदि–आदि।)

2) नीचे एक कार्य दिया गया है। क्या आप यह मानते हैं कि यदि यह कार्य जोड़े में या छोटे समूहों में कराया जाए तो अधिक लाभप्रद होगा? यदि हाँ, तो कैसे?

एक झरने की कल्पना कीजिए। झरने से संबंधित जो शब्द और पदबंध आपके मस्तिष्क में आते हैं उनका वेबचार्ट तैयार कीजिए। नीचे उदाहरण के लिए दो दिए गए हैं।

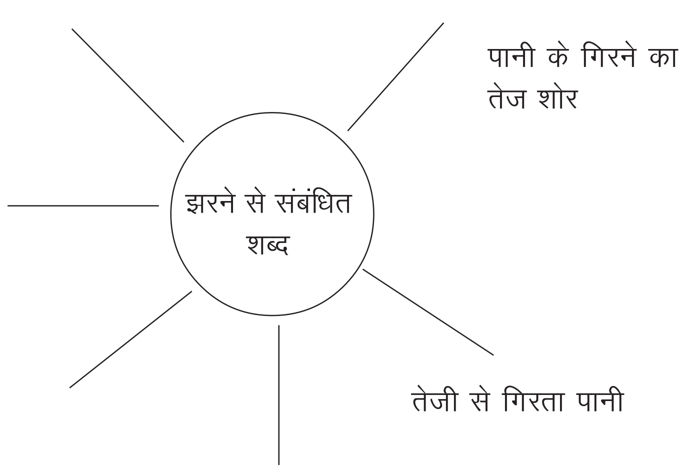

8.4 अंग्रेजी अध्यापन–अधिगम में रचनावादी परिप्रेक्ष्य

अंग्रेजी भाषा अध्यापन के वर्तमान तरीकों में कुछ अंतर्निहित समस्याएँ आती हैं जैसे कि उनमें बच्चों की भाषा अधिगम की स्वाभाविक क्षमता की उपेक्षा होती है और कठोर अभ्यास आधारित कार्यक्रमों पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है। दूसरी ओर रचनावादी उपागम भाषा अधिगम से भाषा अर्जन की ओर आगे बढ़ता है जिसमें भाषा, भाषा अर्जन, अध्येता, अध्यापक, अध्यापन सामग्री आदि के नए परिप्रेक्ष्य रहते हैं। सफलता के परिणाम का आंकलन उस प्रेषित/संवाद से किया जाता है, जिसका निर्माण करने में विद्यार्थी सक्षम हों।

इस परिप्रेक्ष्य में निम्नलिखित समस्याओं के समाधान का प्रयास किया जाता हैः

- मानव शिशु के मस्तिष्क में एक आनुवंशिक भाषा प्रणाली होती है और जिसे हम भाषा अर्जन कहते हैं वह इसी स्वाभाविक एवं सहज प्रणाली की अभिव्यक्ति है।
- भाषा अनुकरण से अर्जित नहीं की जाती है बल्कि अंतःदृष्टि पूर्ण सिद्धांत निर्माण से की जाती है।
- पुनरावृत्ति एकांत में भाषिक तथ्यों को सीखने में सहायक हो सकती है परंतु अर्जन के लिए बार–बार घटित होना आवश्यक है।
- भाषा चारों कौशलों की संपूर्णता नहीं है बल्कि चारों कौशलों के निष्पादन के लिए अर्जित क्षमता है।
- भाषा अर्जन रैखिक प्रगति की प्रक्रिया नहीं है अपितु सर्पिल (घुमावदार) प्रगति की प्रक्रिया है।
- भाषा अर्जन उस समय सहज हो जाता है जब भाषायी अनुभव बच्चे के लिए वास्तविक, संपूर्ण, प्रासंगिक, आवश्यकता आधारित और सार्थक होते हैं।
- प्रत्यक्ष सुधार अथवा विस्तार से भाषा अर्जन सुगम नहीं होता। इसके लिए ऐसे प्रचुर भाषायी वातावरण की आवश्यकता होती है जो अप्रत्यक्ष रूप से काफी नकारात्मक जानकारी देगा।
- भाषा अलग–अलग ध्वनियों, वर्णों, शब्दों या वाक्यों में नहीं होती। यह केवल प्रोक्ति (संवाद, कविताओं, विवरणाओं आदि) के रूप में होती है।
- भाषा में केवल अभिव्यक्ति की मात्रा का नहीं बल्कि उसकी गुणवत्ता का महत्व है। भाषा अर्जन तभी होगी जब अध्येता कक्षा में निर्मित प्रोक्तियों के माध्यम से संपूर्ण बोधगम्य जानकारी प्राप्त करता है।

भाषा हालाँकि केवल प्रोक्ति के रूप में होती है तथापि अध्यापक का ध्यान बच्चों की मौखिक एवं लिखित रूप में प्रोक्ति निर्मित करने की क्षमता पर केन्द्रित होना चाहिए। परंतु भाषा की पृथक–पृथक इकाइयों जैसे शब्दों और संरचनाओं को सीखकर बच्चे इस क्षमता को विकसित नहीं कर पाएँगे। शब्दों के खंडात्मक व्यवहार से हमें संपूर्ण व्यवहार की ओर प्रस्थान करना होगा। यह केवल तभी संभव होगा जब बच्चों को प्रोक्तियों के माध्यम से प्रामाणिक भाषायी अनुभव सिखाया जाए।

जब हम प्रोक्ति अभिमुखी शिक्षणशास्त्र का विकल्प चुनेंगे तो हम अध्येताओं के समक्ष भाषायी घटक प्रस्तुत करने की रैखिक पद्धति को छोड़ने के लिए बाध्य होंगे। संरचनात्मक कोटिकरण वाली पाठ्य पुस्तकों के स्थान पर हमें प्रोक्ति के कोटिकरण पर ध्यान देना

होगा। इसके लिए हमें प्रत्येक प्रोक्ति के भाषायी स्तर को निश्चित करना होगा। उदाहरण के लिए, कक्षा 4 में प्रोक्ति के रूप में डायरी लगाई जाती है जो माध्यमिक स्तर तक पहुँचते–पहुँचते आत्मकथा लेखन का रूप ले लेती है अथवा वार्तालाप जैसी प्रोक्ति की स्थिति ले लेती है। हम उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्येता द्वारा किए जाने वाले वार्तालाप को हाई स्कूल के विद्यार्थी के वार्तालाप से कैसे भिन्न करेंगे? ऐसा हम प्रोक्ति के विभिन्न भाषायी स्तरों का निर्धारण करके ही कर सकते हैं। प्रारंभिक अध्येता के लिए पहल और प्रतिक्रिया पर्याप्त होगी परंतु जैसे–जैसे वह उच्चतर स्तर पर पहुँचता है हम उससे संरचना और शैली दोनों दृष्टि से परिष्कृत वार्तालाप की अपेक्षा करते हैं। इसी प्रकार अन्य प्रोक्तियों जैसे अधिसूचनाओं, भाषणों, कविताओं, पत्रों, विवरणों, नाटकों, स्क्रीनप्ले आदि की स्थिति में प्रोक्तियों का कोटिकरण निर्धारित किया जा सकता है।

कक्षा में संव्यवहार की सामान्य संरचना कुछ–कुछ निम्नलिखित जैसी होगीः

- कुछ पठन पूर्व कार्य
- पठन कार्य
- कुछ पठन पश्च कार्य

प्रत्यक्ष रूप से यह संरचना उसी प्रकार की है, जिसे हम परंपरागत रूप से अपनाते आ रहे हैं। तथापि यह पारंपरिक संरचना से इस अर्थ में भिन्न है कि ज्ञान निर्माण अध्येताओं की ओर से होता है। हम केवल जानकारी प्राप्त करने और संप्रेषित करने का काम करते हैं। इसके लिए पठन पूर्व एवं पठन पश्च कार्यों के गुणात्मक परिष्करण की आवश्यकता होती है। हमारा सुझाव है कि निम्नलिखित प्रतिमानिक पद्धति को अपनाया जाए।

पठन पूर्व सत्र

i) सुगमकर्ता अध्येताओं के साथ उनमें संप्रेषण संभावना जगाने के लिए अनौपचारिक तरीके से संवाद करता है जिससे वे मानसिक रूप से आगामी कार्यकलापों से संलिप्त हो सकें। यह किसी भी आधार पर जैसे फोटोग्राफ, दृश्य खंड (Visual clipping), समाचार आदि के माध्यम से किया जा सकता है जो अध्येताओं को वह विषय समझने में प्रारंभकर्ता का काम करेगा जिसके चारों और कक्षा के समूची गतिविधियों का ताना–बाना बुना गया है।

ii) सुगमकर्ता कोई विवरण प्रस्तुत करेगा अथवा चर्चा शुरु करेगा जिससे अध्येताओं की विषय से संबंधित समझ और बढ़ेगी।

iii) इसके बाद अध्येताओं की खुली प्रतिक्रिया जानने के लिए कुछ और विश्लेषणात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे। ये प्रश्न अध्येताओं को यह कुशल पूर्वानुमान लगाने में सहायक होंगे कि वे क्या पढ़ने जा रहे हैं।

पठन

अगला भाषायी प्रतिमान पठन कार्य अपनाने का है। इसमें कई छोटी–छोटी प्रक्रियाएँ शामिल होती हैं:

i) **वैयक्तिक पठनः** ध्यान रखें कि बच्चे विषयवस्तु के बारे में पहले ही कुछ कुशल पूर्वानुमान लगा चुके हैं। अब वे यह जानने का भरपूर प्रयास करेंगे कि उनका पूर्वानुमान सही था या नहीं। इस अर्थ में पठन आवश्यकता आधारित है और आंतरिक रूप से अभिप्रेरित कार्य है। बेशक, यहाँ उन्हें अपरिचित शब्दों अथवा संरचनात्मक जटिलताओं के कारण कुछ अड़चनें आएँगी।

ii) **सहपाठन:** बच्चे समूहों में बैठते हैं और निम्नलिखित दृष्टि से अपने पठन अनुभवों का समूह के अन्य बच्चों के साथ आदान–प्रदान करते हैं:
- उन्होंने जो पाठ पढ़ा वह उन्हें कितना समझ आया।
- उन्हें क्या समझ नहीं आया।
- उन्हें उस पाठ में सबसे अच्छा क्या लगा।

iii) इसके पश्चात, सुगमकर्ता के माध्यम से अन्य समूहों के साथ विचारों का आदान–प्रदान किया जाता है। कभी–कभी शब्दावली या शब्दकोश का भी प्रयोग किया जाएगा।

iv) जब सहपठन पूरा हो जाता है तब सुगमकर्ता उस पाठ से संबंधित कुछ प्रश्न पूछता है। इसका अर्थ उनकी समझ की जाँच करना नहीं है, बल्कि ये प्रश्न विश्लेषणात्मक स्वरूप के होते हैं जैसे विमर्शी प्रश्न, अनुमेय प्रश्न, कारण–परिणाम प्रश्न आदि। ये प्रश्न अध्येताओं के लिए पाठ को स्थानीयकरण और मानवीयकरण द्वारा आत्मसात करने में सहायक होते हैं।

v) सुगमकर्ता पाठ को जोर–जोर से पढ़ सकता है। यह अध्येताओं के लिए पाठ के बेहतर अर्थ को समझने में सहायक होगा। इसके अतिरिक्त अध्यापक का इस प्रकार पढ़ना अध्येताओं के लिए उच्चारण विशिष्टताओं की दृष्टि से भी श्रवण अनुभव (इनपुट) का कार्य करेगा।

vi) अध्येता के मनो–मस्तिष्क को समझने का कार्य भी किया जा सकता है जो अध्येताओं की चिंतन प्रक्रिया को जानने के साधन का कार्य करेगा। वे आपकी बोध प्रश्न 1 की जाँच स्वरूप उनमें विकसित मनोविचारों का वर्णन कर सकते हैं।

पठन–पश्च सत्र

पठन–पश्च सत्र का मुख्य कार्य अध्येताओं द्वारा प्रोक्ति का निर्माण है। श्रवण और पठन के माध्यम से प्राप्त अपने अनुभवों के आधार पर वे ऐसा कार्य लेने की स्थिति में होंगे जो उनसे विशिष्ट प्रोक्ति (वार्तालाप, विवरण, कहानी आदि) का निर्माण करने के लिए कहेगा। प्रत्येक प्रोक्ति के लिए विशिष्ट प्रक्रिया की आवश्यकता होती है जिसके बिना अध्येता उसका निर्माण करने में समर्थ नहीं होंगे। प्रोक्ति निर्माण की सूक्ष्म प्रक्रिया से निम्नलिखित सुनिश्चित होता है:

- वैयक्तिक निर्माण;
- कुछ व्यक्तियों द्वारा प्रस्तुति;
- परिष्करण के लिए समूह में विचार–विनिमय;
- समूहों द्वारा प्रस्तुति; और
- लक्षित प्रोक्ति के सुगमकर्ता के प्रारूप की प्रस्तुति।

संपादन

अध्येताओं द्वारा (वैयक्तिक रूप से या समूहों में) निर्मित प्रोक्तियों में कुछ गलतियाँ हो सकती है। ये गलतियाँ वाक्यविन्यास या रूप विज्ञान अथवा दोनों ही से संबद्ध हो सकती हैं। इनके साथ ही, विराम चिन्हों अथवा वर्तनी संबंधी भी हो सकती है। इसके सुधार के लिए संपादन की एक कुशल प्रक्रिया होती है। यह व्याकरण सिखाने का समय नहीं होता बल्कि अध्येताओं को उनके सुगठित संरचनाओं के अंतर्ज्ञान को झकझोर कर इन गलतियों के प्रति सावधान किया जाता है। यह एक प्रकार से सजग निरीक्षक का कार्य करता है। ध्यान रहे, यह बोध अनजाने में अर्जित किया जाता है, सावधानीपूर्वक व्याकरणिक तथ्यों को सीखकर नहीं।

8.5 प्राथमिक विद्यालय स्तर पर भाषा कौशल के उन्नयन के लिए प्रौद्योगिकी का प्रयोग करना

भाषा अध्यापक के रूप में हमें यह पूरी तरह स्पष्ट होना चाहिए कि शिक्षा में प्रौद्योगिकी अभी नया यंत्र है। यदि हम भाषा की कक्षा में अध्यापन–अधिगम की प्रक्रिया में प्रौद्योगिकी का समावेश नहीं करेंगे तो हम काफी पिछड़ जाएँगे। इसका प्रमाण हमें तब मिलता है जब हम अध्यापन–अधिगम के परंपरागत उपागम की प्रौद्योगिकी समर्थित उपागम से तुलना करते हैं। निम्नलिखित तालिका को देखें:

परंपरागत अधिगम उपागम	**प्रौद्योगिकी समर्थित उपागम**
अध्यापक जानकारी का स्रोत है।	शिक्षादाता जानकारी के स्रोतों के निदेशक होते हैं।
अध्येता अध्यापक से जानकारी प्राप्त करते हैं।	अध्येता स्वयं कार्य करके सीखते हैं।
अध्येता स्वयं कार्य करते हैं।	अध्येता समूहों में और एक–दूसरे से सीखते हैं।
परीक्षाएँ केवल मूल्यांकन युक्ति का कार्य करती हैं।	आकलन अधिगम युक्तियाँ निर्दिष्ट करने और भावी अधिगम के लिए मार्ग निर्धारण करने के लिए किया जाता है।
सभी अध्येता एक जैसा कार्य करते हैं।	शिक्षादाता निजी विशिष्टीकृत अधिगम योजनाएँ बनाते हैं।
	होते हैं; प्रारंभिक ेक विकास संबद्ध
	के अवसर मिलते

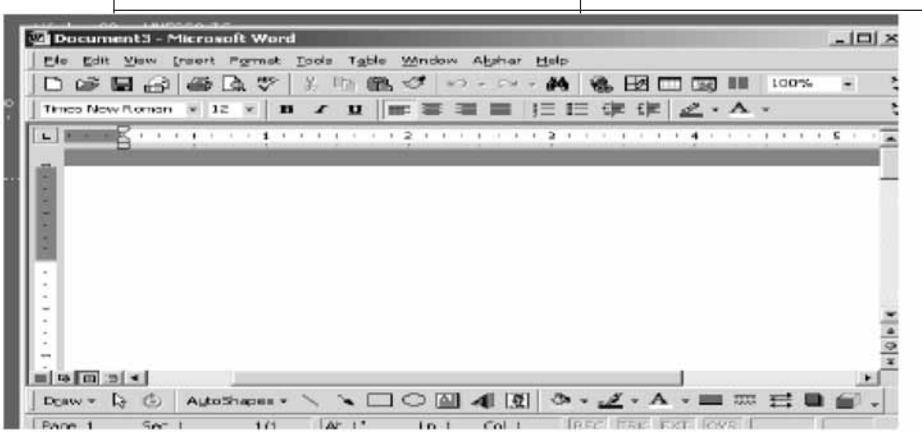

ुकेशन– दी वर्ल्ड

ेद्यार्थियों के भाषा कौशल को बढ़ाने के लिए कर सकता है।

शब्द संसाधक (Word Processor)

प्रारंभिक स्तरों पर की बोर्ड का प्रयोग करके वर्णों की पहचान करवाई जा सकती है। कीबोर्ड पर टंकण करने और बाद में अक्षरों के स्क्रीन पर चमकने से बच्चे की तत्काल प्रतिक्रिया करने की इच्छा पूरी होती है। आवाज डालने से श्रवण–दृश्य प्रभाव पड़ता है। अध्यापक अक्षरों से आगे बढ़कर स्वर और चित्रों का प्रयोग कर सकता है। अगला चरण शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करना हो सकता है और इस समय तक वे कक्षा पाँचवीं के स्तर तक पहुँच जाते हैं और विद्यार्थी अब रचनात्मक कहानियाँ लिख सकते हैं।

बाद के चरण में प्रतिवेदन लिखने, परियोजनाओं पर काम करने और पर्याय कोश (थिसॉरस) से चुनकर सटीक शब्दावली का प्रयोग करने से भाषा कौशल बढ़ता है। "वर्तनी जाँच" और "व्याकरण" उपकरण का प्रयोग करना सीखने से न केवल अध्यापक का भार कम होगा बल्कि यह विद्यार्थियों को अभिप्रेरित करने में भी सहायक होगा क्योंकि इससे स्वयं सुधार करने और बिना किसी गलती के कार्य प्रस्तुत करने का भाव आता है। प्रतिमानिक लेखन गतिविधियाँ और साझा लेखन गतिविधियाँ विद्यार्थियों को लेखन की प्रक्रिया देखने में सहायक होती हैं और इससे लेखन के लिए असाधारण अवसर मिल सकता है। समूह में और स्वतंत्र कार्य करने के लिए कुछ सॉफ्टवेयर उपलब्ध हैं।

अंग्रेजी में सूचना संप्रेषण तकनीकी का अध्यापक विद्यार्थियों को निम्नलिखित कार्य करने में समर्थ बनाकर उनके अध्यापन–अधिगम के कौशल को बढ़ा सकता है:

- शब्द संसाधक और अन्य डेस्क टॉप पब्लिशिंग पैकेज का प्रयोग करके अपने स्वयं के लेखन की योजना बनाना, प्रारूप तैयार करना, संशोधित करना और संपादित करना।
- खोज युक्ति (सर्च स्ट्रेटजी) का प्रयोग करके पाठ के महत्वपूर्ण अंश का आसानी से पता लगाना और पढ़ना।
- सूचना का तेजी से, गोपनीय ढंग से और सही–सही पता लगाना।
- विभिन्न रूपों और शब्दाकारों ;थ्वदजेद्ध में लेखन को प्रकाशित करना।
- व्यापक संख्या में ऑनलाइन पाठ जैसे कि समाचारपत्रों तक पहुँच रखना।
- व्यापक जन समूह के साथ संप्रेषण करना जैसे ई–मेल, न्यूजग्रुप और ऑनलाइन कांफ्रेंसिंग करना।
- विभिन्न माध्यमों को एक ही पाठ में समेकित करना।
- निम्नलिखित के लिए पाठों की व्यापक रूपों का प्रयोग करना।
  - सूचना प्रस्तुत करने के तरीके का मिलान करना।
  - विशिष्ट प्रकार के पाठ की विशिष्टताओं की पहचान करना।
  - विशिष्ट प्रकार के पाठ के गुण और सीमाओं पर चर्चा करना।
  - यह पता लगाने के लिए कि पठन नीतियों को विभिन्न प्रकार के पाठ के अनुरूप कैसे ढाला जाए।

(डी.एफ.ई.ई., दी नेशनल लिटरेसी स्ट्रेटेजी, 1988)

आंकणाकोश प्रबंधन (डाटाबेस मैनेजमेंट) और स्प्रैडशीट अनुप्रयोग

जहाँ उपर्युक्त अनुप्रयोगों से स्वयं अंकगणित बहुत अच्छी तरह सीखा जा सकता है, वहीं भाषा अध्यापक उनका प्रयोग अर्थबोध के प्रभावी विकास के लिए कर सकता है। कक्षा तीसरी से कक्षा पाँचवीं तक के विद्यार्थियों को साधारण विषयों जैसे पसंदीदा रंगों, प्रत्येक

महीने में आने वाले जन्म दिनों, मौसम की रिपोर्ट आदि के आँकड़े संग्रह करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। फिर उसे स्प्रैडशीट पर दिखाकर ग्राफ तैयार किए जा सकते हैं। विद्यार्थियों के लिए उत्तर देने हेतु प्रश्नों की शृंखला बनाई जा सकती है जिसके लिए ग्राफ के विश्लेषण और व्याख्या की आवश्यकता होगी। संभावित प्रश्नों को शब्द संसाधक का प्रयोग करके टंकित किया जा सकता है अथवा कक्षा में वार्ता के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

ग्राफ को महत्वपूर्ण इस मानने के साथ–साथ विद्यार्थी, विश्लेषण, अर्थबोध और प्रस्तुति के भाषा कौशल का भी प्रयोग करेंगे।

बहुसंचार माध्यम (मल्टीमीडिया) प्रस्तुति

बहुसंचार माध्यम (मल्टीमीडिया) प्राथमिक अध्यापकों को पाठ प्रस्तुत करने का पर्याप्त अवसर देता है। इसका प्रत्येक प्रकार के अध्येता पर प्रभाव पड़ता है और बहु–बुद्धि की संकल्पना को पूरा करता है (हावर्ड गार्डनर)। बहुसंचार माध्यमों में निम्नलिखित तीन या अधिक माध्यम होते हैं जिनका प्रयोग कम्प्यूटर पर किया जा सकता हैः

- वाक् या अन्य ध्वनियाँ
- आरेख या डायग्राम
- सजीवन (एनिमेशन)
- स्थिर छायाचित्र
- सचल दृश्य खंड (वीडियो क्लिप)
- पावर प्वाइंट प्रस्तुतियों सहित पाठ

अच्छी बहुसंचार माध्यम प्रस्तुति में अध्येता कम्प्यूटर के सामने निष्क्रिय नहीं होना चाहिए। इसमें अध्येता को कुछ करने के लिए प्रेरित करना चाहिए और परिणाम तत्काल प्राप्त होने चाहिए जैसे वर्कशीट, जिनमें सुधार किया जा सकता है। कम्प्यूटर नहीं, बल्कि अध्येता नियंत्रण में होना चाहिए। इस संदर्भ में यह उल्लेखनीय है कि अंतःक्रियात्मक (इंटरैक्टिव) वीडियोडिस्क और टेलीविजन भी सीखने के लिए प्रभावी उपकरण हो सकता है।

बहुसंचार माध्यम पढ़ने और लिखने में परेशानी महसूस करने वाले विद्यार्थियों के लिए भी प्रभावी होता है। तस्वीरें धीरे–धीरे शब्दों से संवाद करने लगती हैं। तस्वीरें और शब्द मिलकर कार्य करते हैं और एक–दूसरे के साथ संवाद करते हैं। कभी–कभी केवल लिखित पाठ के आधार पर प्रारंभिक स्तर पर विशेष रूप से संप्रेषण का आकलन करना हतोत्साहक हो सकता है। बहुसंचार माध्यम के साथ विद्यार्थियों द्वारा स्वयं को अभिव्यक्त करने के लिए पाठ्येत्तर स्रोतों का उपयोग किया जा सकता है। यह विद्यार्थियों के लिए उनके अपने कार्य में अपने सांस्कृतिक, सामाजिक या व्यक्तिगत विचारों का समावेश करने में सहायक होता है। व्यक्तिगत अभिव्यक्ति के समावेश से विद्यार्थियों को लिखित शब्द की परिसीमाओं से परे शक्ति एवं अभिप्रेरणा मिलती है। चित्रों पर संवाद कर सकते हैं और व्याकरण, वाक्य तथा कहानियों जैसे भाषा के रचनात्मक पक्ष उभर सकते हैं। बच्चे अवसर मिलने पर वास्तव में, “अच्छी तस्वीर से बातचीत कर सकते हैं।” यह विशेष रूप से इस तथ्य के बावजूद सहायक होता है कि “अध्येता जो सुनते हैं और देखते हैं उसका लगभग 25 प्रतिशत और जो सुनते हैं और करते हैं उसका लगभग 75 प्रतिशत धारण कर सकते हैं।” (ब्रियान स्कारबो, 1993)। कक्षा चौथी और पाँचवीं के विद्यार्थियों को कुछ और कार्य दिए जा सकते हैं जैसे “आत्मकथा लिखना”, “दैनन्दिनी लिखना” और “समाचारपत्रक तैयार करना।”

शब्द संसाधक, प्रस्तुतीकरण उपकरण और बहुसंचार माध्यम कार्यक्रम का प्रयोग निम्नलिखित कार्यों के लिए किया जा सकता हैः

- वाक्यों में शब्द समूहों को रेखांकित करना
- स्वनों का प्रदर्शन करना (एक घेरे में खेलना)
- क्रियाओं में (ing) लगाना।
- क्रियाओं का काल परिवर्तन करना।
- संज्ञा का वर्णन करने के लिए विशेषण जोड़ना।
- कट एवं पेस्ट का प्रयोग करके वाक्यों या पदबंधों का सही क्रम में रखना।
- कविता लेखन का प्रतिरूप बनाना।
- संकल्पना चित्र बनाने के लिए महत्वपूर्ण शब्दों की सूची तैयार करना।
- महत्वपूर्ण शब्दों से वाक्य बनाना
- कर्ता–क्रिया की अनुरूपता को प्रदर्शित करना।
- शब्द स्तर के कार्यों की विविधता के बारे में प्रस्तुति करने जैसे संज्ञाओं को एकवचन से बहुवचन में बदलने के लिए हाइपर स्टूडियो का उपयोग करना।

स्मरण रखें कि कार्य अध्येता के स्तर के उपयुक्त होना चाहिए।

वर्ल्ड वाइड वेब का उपयोग करना

इंटरनेट को प्रायः कम्प्यूटर के संजाल के रूप में परिभाषित किया जाता है लेकिन जो लोग इन कम्प्यूटर का प्रयोग करते हैं, इसे उन लोगों का भी संजाल मानना आवश्यक है। कुछ और ऐसी गतिविधियों की सूची नीचे दी गई हैं जो भाषा कौशल सीखने पर बल दे सकते हैं:

- पढ़ना सिखाने के लिए बोलती पुस्तकों का प्रयोग करना। विद्यार्थी पाठ और तस्वीरों को देख सकते हैं और पढ़े जाने वाले पाठ को सुनते हैं। विद्यार्थी पठन प्रक्रिया की उसी तकनीक को अपना सकते हैं जैसे विकूटीकरण (विकोडन), स्वनों का प्रयोग करना, तथा परिदृश्य में शब्दों को देखना। ये पुस्तकें पढ़ने में आसान और मजेदार होती हैं और बच्चे उन्हें पढ़ने के लिए अभिप्रेरित होते हैं। बच्चे आवाज के लिए शब्दों, तस्वीरों आदि पर क्लिक कर सकते हैं। "ई–पुस्तकों" का प्रयोग करने और उन्हें डाउनलोड करने के लिए अध्यापक से स्पष्ट दिशा–निर्देश आवश्यक होता है।
- विद्यार्थी अपने विद्यालयों से जुड़ सकते हैं और पुस्तकों, वार्ताओं, विचारों और पत्रों का आदान–प्रदान कर सकते हैं। वे "ऑनलाइन मित्र" (Key-pal) बना सकते हैं।
- विद्यार्थी शृंखलाबद्ध कहानियाँ लिख सकते हैं। यह दूसरे विद्यालयों से जुड़ने में सहायक होता है। यह विद्यार्थियों को दूसरे विद्यार्थियों द्वारा लेखन को पढ़े जाने और आलोचना किए जाने का अवसर प्रदान करता है।

- वे बेवसाइट पर वास्तव में पर्यटन स्थल देखकर; उनसे संबंधित सामग्री का संग्रह करके और भ्रमण के लिए स्थानों का चयन करके पर्यटक सूचनापत्रक तैयार कर सकते हैं।
- विद्यार्थी वेब क्वेस्ट करने का प्रयास कर सकते हैं जिसमें इंटरनेट का प्रयोग शामिल होता है।
- विद्यार्थी अपनी रचनाओं को जैसे कहानियों और कविताओं को इंटरनेट पर प्रकाशित कर सकते हैं।
- अध्यापक साझा शिक्षण समस्याओं का आदान–प्रदान कर सकते हैं क्योंकि अब पूरी दुनिया में द्वि भाषी–अध्येता विद्यालयी शिक्षा का हिस्सा है।
- वीडियो कांफ्रेसिंग की पर्याप्त सुविधाएँ होने से विद्यालय दूसरे विद्यालयों के साथ जुड़ सकते हैं और दूसरी ओर वे वक्ताओं को देख सकते हैं। भारत में जापानी सीखने वाले भारतीय बच्चों का समूह अंग्रेजी सीखने वाले जापानी बच्चों के साथ जुड़ते हैं। दोनों के लिए भाषा अधिक सार्थक हो जाती है और वास्तविक संप्रेषण होता है।
- विद्यार्थियों को अधिक लोगों के लिए लिखने हेतु ई–मेल का प्रयोग करना चाहिए। यह अन्य विद्यालयों के ऐसे विद्यार्थियों के लिए हो सकता है जो संयुक्त ई–मेल परियोजना या ऐसे संगठनों से संबद्ध हो सकते हैं जिससे उन्हें कक्षा के विषय के लिए जानकारी चाहिए। विद्यार्थी कहानियों के पहले प्रारूप का आदान–प्रदान कर सकते हैं। उसके बाद उनकी अन्य विद्यार्थियों द्वारा समीक्षा की जाती है वे टिप्पणियों के साथ अपने उन प्रारूपों में वापस सुधार कर सकते हैं। वे संयुक्त रूप से प्रश्नावली तैयार कर सकते हैं जिसका प्रयोग उनके अपने विद्यालयों में सूचना का संग्रह करने के लिए किया जा सकता है।

प्रौद्योगिकी समावेशन की चुनौती का सामना करने में अध्यापक की भूमिका

अब हम यह देखेंगे कि अध्यापकों को प्रौद्योगिकी समावेश का मुकाबला करने के लिए किस प्रकार तैयार होना चाहिए। कई अध्यापक अपने अध्यापन में प्रौद्योगिकी का प्रयोग करने के लिए पूरी तरह तैयार नहीं होते। उनमे से कुछ प्रौद्योगिकी में सेवापूर्व प्रशिक्षण प्राप्त हो सकते हैं परंतु अभी भी कम्प्यूटर कौशल के साथ उतना सुविधाजनक महसूस नहीं करते। इससे प्रौद्योगिकी का समावेश शुरु करने में चुनौती सामने आ सकती है। संभव है, प्रौद्योगिकी की थोड़ी–बहुत जानकारी रखने वाला नया अध्यापक मार्गदर्शन एवं सहायता के बिना स्वयं को तैयार महसूस न करें। इस चुनौती का सामना करने में सहायक कुछ संकेत आपको दिए जा रहे हैं।

- आपके कौशलों और कमियों का स्व–मूल्यांकन आवश्यक है। उन्हें समझे और सीखने के लिए तैयार हो जाएँ।
- अपने विद्यालय में उन लोगों का पता लगाएँ जो प्रौद्योगिकी की जानकारी का आदान–प्रदान करने के लिए तैयार हैं और उनके पास समय भी है।
- काफी मात्रा में पुस्तकें उपलब्ध हैं और वे सस्ती भी हैं।
- विद्यार्थियों को सहायता करने के लिए कहें।
- अपने लक्ष्य निर्धारित करें और स्वयं को सीखने के लिए प्रेरित करें।
- ई–मेल का प्रयोग करना और विचारों का आदान–प्रदान करना सीखें।
- अपने विद्यालय की प्रौद्योगिकी योजना से अवगत रहें।

- प्रौद्योगिकी सम्मेलनों में भाग लें और विद्यालय से विचार लेकर आएँ।
- वेब पर ऐसे समूहों में शामिल हों जो अंग्रेजी भाषा अध्यापन में प्रौद्योगिकी का प्रयोग करते हैं।
- अपने निर्देशों में प्रौद्योगिकी का प्रयोग करने के लिए योजना बनानी शुरु कीजिए।
- अपने विद्यालय कम्प्यूटरों और विद्यालय में उपलब्ध सामग्री के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए।
- विद्यालय के प्रौद्योगिकी समन्वयकर्ता से सहायता लीजिए।
- प्रौद्योगिकी के बारे में विद्यार्थियों की जानकारी से अवगत रहिए।
- प्रौद्योगिकी कौशल के समय–समय पर उन्नयन द्वारा अपनी प्रौद्योगिकी बुद्धिलब्धता (T.Q.) को बढ़ाइए।

अंग्रेजी के प्राथमिक अध्यापक के रूप में, वे कौन–सी प्रौद्योगिकी कौशल हैं जो विद्यार्थियों के अध्यापन के संदर्भ में आपके लिए महत्वपूर्ण हो सकते हैं?

- शब्द संसाधन, आंकणाकोश प्रबंधन एवं स्प्रेडशीट अनुप्रयोग
- बहुसंचार माध्यम प्रस्तुतियाँ तथा पावर प्वाइंट प्रस्तुतियाँ तैयार करने की योग्यता।
- सूचना प्राप्त करने की योग्यता।
- दूरवर्ती शिक्षा स्थितियों के लिए श्रव्य (ऑडियो) एवं दृश्य (वीडियो) कांफ्रेंसिंग के प्रयोग की योजना।

सूचना एवं संप्रेषण प्रौद्योगिकी (आई सी टी) पाठों के प्रयोग के लिए सुझाव

यहाँ पाठ का प्रयोग करने के लिए कुछ प्रारूपी गतिविधियाँ दी गई हैं जिनका आप अपनी कक्षा में प्रयोग कर सकते हैं:

- विद्यार्थियों से कोई पाँच परिचित वस्तुएँ बताने के लिए कहें। उन्हें लिखित वाक्यों से मेल खाते क्लिप ढूँढ़ने दें अथवा क्लिप से मेल खाते वाक्य बनाने के लिए कहें। दो अपूर्ण वाक्यों के समूह तस्वीरों के साथ मिलान करने के लिए दिए जाएँगे।
- विद्यार्थी नामों से संबंधित शब्द टाइप कर सकते हैं और इनका प्रयोग कक्षा में उपलब्ध वस्तुओं – मेज, कुर्सी आदि के लिए किया जा सकता है।
- अध्यापक विभिन्न विषयों के शब्दकोश तैयार कर सकते हैं। फिर विद्यार्थियों से इन शब्दकोशों के आधार पर पाठ तैयार करने के लिए कहा जा सकता है। जैसे–जैसे कठिनाई स्तर बढ़ता जाए उन्हें और शब्द जोड़ने के लिए कहा जाए।
- विद्यार्थी कहानी बताने के लिए तस्वीरों से जुड़े पाठ लिखकर तस्वीर वाली पुस्तकें तैयार कर सकते हैं।
- विद्यार्थी किसी घटना के अनुक्रम में साधारण वाक्य लिख सकते हैं। वे "विद्यालय में खेल दिवस" पर साधारण वाक्य लिख सकते हैं। डिजिटल फोटोग्राफ भी लिखने में सहायक हो सकती हैं।
- अपरिचित शब्द जानने और उनके उच्चारण जानने के लिए भी सीडी रोम शब्दकोश का प्रयोग किया जा सकता है।

- विद्यार्थी आकारों पर कविताएँ आदि लिख सकते हैं।
- विद्यार्थी अध्यापक की सहायता से कक्षा का समाचारपत्रक तैयार कर सकते हैं जिसमें तस्वीरें, शीर्षक, विभिन्न शब्दरूप आदि हों।
- विद्यार्थी समसामयिक विषयों – संरक्षण, स्वच्छता, बुजुर्गों का सम्मान आदि पर तस्वीर तैयार कर सकते हैं।
- विद्यार्थी वास्तविक उद्देश्य के लिए व्यक्तिगत, सामूहिक या कक्षा संबंधी पत्रों का प्रारूप तैयार करके लिख सकते हैं।
- विद्यार्थी कहानियाँ अर्थात परी कथाओं के आधुनिक संस्करण लिखकर प्रकाशित कर सकते हैं।

प्रारूपी पाठ योजना को कुछ स्रोत :

http://www.esl-galaxy.com/travel/callingtravelagency.pdf

http://www.teachingideas.co.uk/english/contents_writingfiction.htm

http://www.englishavenue.com/toursamples/activity-sample1.pdf

http://www.eduplace.com/rdg/hmr06/4/1/act2.html

http://www.bbc.co.uk/skillswise/english/games

http://zunal.com/webquest.php?w=163040

अंग्रेजी के लिए वेबसाइट :

यहाँ कुछ वेबसाइट दी गई हैं जिन पर आप जा सकते हैं।

www.elt.oup.com

www.brtishcouncil/learningenglishkids.org

www.cambridge.org/elt

www.onestopenglish.com

www.usingenglish.com/teachers

www.britishcouncil.in/teach-english

www.scholastic.com/elt

www.teachingenglish.org.uk

www.english-teaching.co.uk

www.teacher2b.com

www.worksheetfactory.com

www.onestopenglish.com/skills/reading

www.bbcworldservice.com/grammar/vocabulary

www.chompchomp.com

www.edhelper.com

8.6 सारांश

इस इकाई में आपने बीसवीं और इक्कीसवीं शताब्दियों में प्रचलित विभिन्न, अध्यापन पद्धतियों और उनके अध्यापन–अधिगम की प्रक्रिया में अनुप्रयोग के बारे में जाना। आपने संप्रेषणात्मक उपागम और अध्येताओं को व्यस्त रखने के प्रोक्ति परिप्रेक्ष्य को समझा। इक्कीसवीं शताब्दी में कोई भी प्रौद्योगिकी की भूमिका को नकार नहीं सकता। इस इकाई में आपने भाषा की कक्षा में प्रौद्योगिकी के समावेशन के तरीके सीखे।

8.9 अन्य उपयोगी पुस्तकें

ब्रीन, एम. एवं केंडलिन, सी. (1987), "विच मैटिरियल्स? ए कंज्यूमर'स एंड डिजाइनर'स गाइड", इन एल. सेलडोन (संपा.), *ईएलटी टेस्टबुक्स एंड मैटिरियल्सः प्रोबल्मस इन इवलयूशन एंड डेवलेपमेंट,* ऑक्सफोर्डः माडर्न इंग्लिश पब्लिकेशन्स एंड दी ब्रिटिश काउंसिल, पृ. 13–28।

डिपार्टमेंट फॉर एजुकेशन एंड इम्प्लायमेंट (1998), *दी नेशनल लिटिरेसी स्ट्रेटजीः फ्रेमवर्क फॉर टीचिंग,* लंदनः डी.एफ.ई.ई.

ह्यूमेस, डी. (1972), "मॉडलस आफ दी इंटरएक्शन ऑफ लैंग्वेज एंड सोशल लाइफ", इन जे.जे. गुमपर्ज एंड डी. ह्यमेस (संपा.) (1972, 1986 में संशोधित संस्करण), डायरेक्शन्स इन सोशियोलिंग्यूस्टिकः दी एथनोग्राफी ऑफ कम्युनिकेशनः न्यूयॉर्क एंड ऑक्सफोर्ड बेसिल ब्लैकवेल, पृ.35–71

इग्नू, यूनिसेफ प्रोजेक्ट "टीचिंग लर्निंग ऑफ इंग्लिश"

लिटलिवुड, डब्ल्यू (1998), फारेन एंड सैकेण्ड लैंग्वेज लर्निंगः कैम्ब्रिजः सी.यू.पी.।

नागराज, जी. (1996), इंग्लिश लैंग्वेज टीचिंग, ओरिण्ट लॉगमेन, पृ. 23।